भगवान बुद्ध के महाश्रावक

राहुल एवं रट्ठपाल

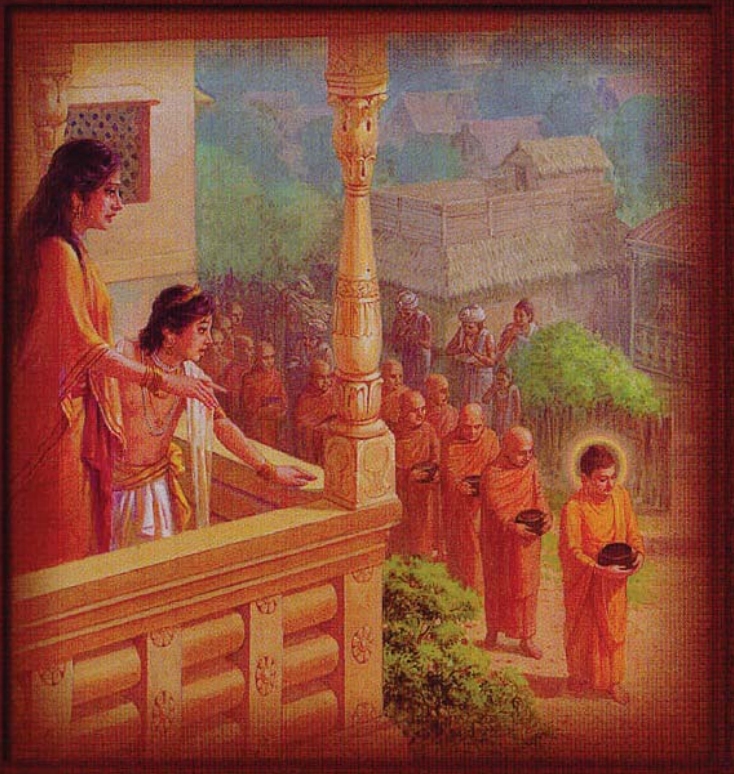

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

राहुल एवं रट्ठपाल

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
सिक्खाकामानं यदिदं राहुलो।"

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
सद्धापब्बजितानं यदिदं रट्ठपालो।"

-अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२०९-२१०)

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में –
शिक्षाकामियों में अग्र हैं राहुल।"

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में –
श्रद्धा से प्रव्रजितों में अग्र हैं रट्ठपाल।"

****

राहुल एवं रट्ठपाल

राहुल एवं रट्ठपाल

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

शिक्षाकामी राहुल १

राहुल और रट्ठपाल का जन्म १
राहुल नामकरण १
सिद्धार्थ का गृहत्याग १
भगवान गौतम का कपिलवस्तु में पुनरागमन २
पुत्र राहुल को पिता के प्रथम दर्शन ३
राहुल की प्रव्रज्या ६
प्रव्रज्या के लिए माता-पिता की आज्ञा ८
शिक्षाकामी राहुल ९

भगवान द्वारा राहुल को उपदेश १२

कर्मों के प्रति सजगता १२
कायिक कर्म – जो करने जा रहे हो १२
कायिक कर्म – जो कर रहे हो १३
कायिक कर्म – जो कर चुके हो १३
वाचिक कर्म – जो करने जा रहे हो १४
वाचिक कर्म – जो कर रहे हो १५
वाचिक कर्म – जो कर चुके हो १५
मानसिक कर्म – जो करने जा रहे हो १६
मानसिक कर्म – जो कर रहे हो १६
मानसिक कर्म – जो कर चुके हो १७
कर्मों का सुधार १७
सीख १८
आचार्य के प्रति आदर-भाव १८

पंचस्कंध के सम्यक ज्ञान से अहंकार का नाश. . . १९
पंचस्कंध के सम्यक ज्ञान से विमुक्ति २०
चार धातुओं के प्रति अपनापन का नाश २१
आनापानसति की भावना २२
अनित्य, दुःख, अनात्म का उपदेश २७
आयुष्मान राहुल को अर्हत्व की प्राप्ति ३०

रट्ठपाल ३१

प्रव्रज्या के लिए धर्म-संवेग जागा. ३१
प्रव्रज्या हेतु माता-पिता की अनुमति के लिए अनशन ३२
रट्ठपाल प्रव्रजित हुआ ३४
माता-पिता को दिया वचन निभाया ३४
मृग ने पाश तोड़ डाला. ३६
रट्ठपाल-कोरव्य सत्संग ३८
गृहस्थ के लिए चार हानियां ३८
भगवान के चार धर्मोपदेश. ४०
मांगन भला न बाप से ४५
श्रद्धा से प्रव्रजितों में अग्र ४६
अतीत कथा ४६

प्रकाशकीय

संसार के दुखियारे प्राणियों को भवचक्र (जन्म-मरण) से मुक्ति में सहायक बनने के लिए, लोककल्याण के लिए सम्यक-संबुद्ध दीपङ्कर के समय अपनी स्वयं की मुक्ति (अर्हंत अवस्था) का अवसर प्राप्त होने पर भी तापस सुमेध ने इसे ठुकरा दिया। वह इसी शिवसंकल्प में डटा रहा कि वह भी सम्यक-संबुद्ध दीपङ्कर की भांति सम्यक-संबुद्ध बने जिससे कि वह अनेकों की मुक्ति में सहायक बने। उसकी यह मनोदशा जान कर दीपङ्कर बुद्ध ने तापस सुमेध के बारे में भविष्यवाणी की – "चार असंख्य और एक लाख कल्पों में शेष आवश्यक पारमिताएं पूरी करके वह (सिद्धार्थ) गौतम के नाम से निस्संदेह बुद्ध बनेगा।"

अनेक जन्मों से लोककल्याण की भावना को अपने हृदय में संजोये हुए बोधिसत्त्व सिद्धार्थ गौतम ने जब चार निमित्त – एक रोगी, एक जराजीर्ण वृद्ध, एक मृत व्यक्ति और एक श्रमण – को देखा तब वह अत्यंत उद्विग्न हो उठा और उसमें महाभिनिष्क्रमण का धर्मसंवेग जागा। उसी दिन पत्नी यशोधरा ने पुत्र राहुल को जन्म दिया। सिद्धार्थ के मन में गृहत्याग से पूर्व अपने नवजात शिशु को देखने की इच्छा जागृत हुई।

शयनकक्ष के दरवाजे के पास जाकर उसने परदा हटा कर देखा कि यशोधरा और राहुल गहरी नींद में सोये हुए हैं। यशोधरा ने हाथ इस प्रकार रखा था कि वह राहुल का चेहरा पूरी तरह नहीं देख पाया। इसके लिए यशोधरा को जगाना उचित नहीं समझा। यशोधरा जागेगी तो शिशु जागेगा। शिशु जागेगा तो उसकी रोने की आवाज से पिता शुद्धोदन, मौसी महाप्रजापति गौतमी तथा अन्य जागेंगे। कोलाहल और कोहराम मच जायगा। गृह त्यागने की योजना असफल हो जायगी। अतः शिशु की एक झलक देख कर ही यह निर्णय करके निकल पड़ा कि जब बोधि प्राप्त कर लूंगा, तभी इसे देखने आऊंगा।